मौलिक भारत

राष्ट्र के नवनिर्माण व व्यवस्था परिवर्तन हेतु एक अभियान/आन्दोलन

मौलिक भारत अभियान

मंदिर संकुल और सेवा

सनातन संस्कृति व चेतना के केंद्र

केन्द्रीय कार्यालय : 306/ए, 37-38-39, अंसल बिल्डिंग, कॉमर्शियल कॉम्पलैक्स, डॉ मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009

Head Office : 306/A, 37, 38, 39, Ansal's Building, Commercial Complex, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009

वेबसाइट : www.maulikbharat.co.in, E-mail : maulikbharat@gmail.com

सम्पर्क सूत्र : 011-27652829, 9811424443

मौलिक भारत अभियान

मंदिर संकुल : सनातन संस्कृति व चेतना के केंद्र

● अनुज अग्रवाल, अध्यक्ष, मौलिक भारत

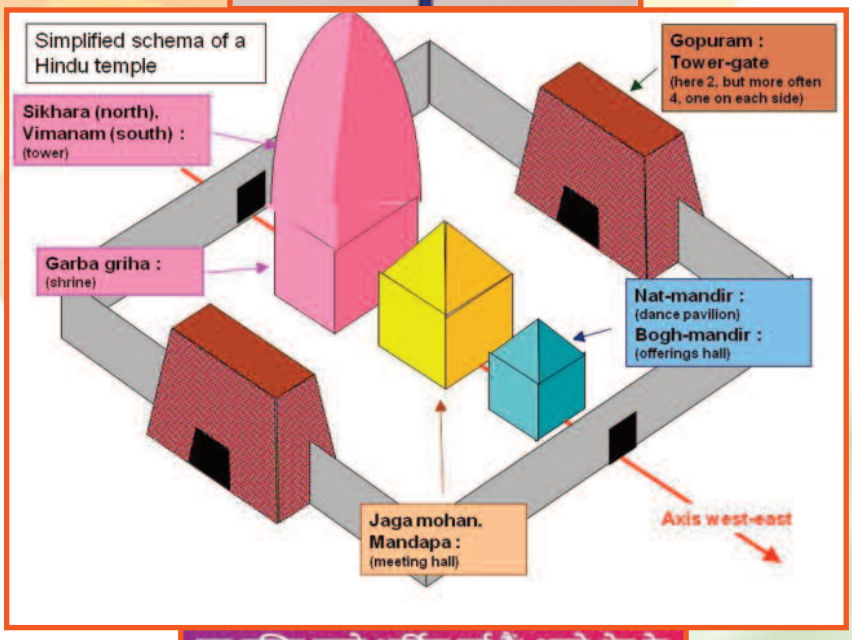

भारत में मंदिर हमेशा सनातन संस्कृति के चेतना केंद्र रहे हैं। धार्मिक व आध्यात्मिक कार्यकलापों का केंद्र रहे मंदिर धीरे धीरे सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों का भी केंद्र बनते गए। देश के इतिहास में लंबे समय तक सेकड़ो राज्यों में राजा के महल और किले के साथ साथ प्रमुख मंदिर और उनसे जुड़े शिक्षित , योग्य व विद्वान ऋषि, मुनि, महंत व पुरोहित प्रमुख स्तंभ बनकर उभर गये राजा को हिंदू धर्म ग्रंथो की व्याख्या, पुनर्लेखन व उनके आधार पर राज्य को चलाने की सलाह राजा को देते थे । सनातनी राज व्यवस्था राजसत्ता, धर्मसत्ता, अर्थसत्ता और समाजसत्ता के आपसी समन्वय व संतुलन का अनोखा उदाहरण व भारत के विशिष्ट लोकतंत्र का परिचायक थी। इसीलिए भारत ज्ञान परंपरा आधारित देश बन पाया।सनातन राज व्यवस्था का माडल किलों, महलों व मंदिरो के इर्दगिर्द रचित हुआ। राज्य का संचालन, कानून व्यवस्था व आंतरिक और बाहरी सुरक्षा किलों व महलों से नियंत्रित होती थी और राज्य की जनता व सामान्य जीवन के कार्यकलापो का केंद्र मंदिर होते थे। यह मंदिर एक संकुल का स्वरूप लेते गए। इस मंदिर संकुल में देव स्थान, ध्यान कक्ष, मंत्रणा कक्ष, सभा/प्रवचन कक्ष, महंत आवास ,यात्री विश्राम ग्रह, यज्ञशाला, धार्मिक पुस्तकालय, वाचनालय, गुरुकुल, गौशाला, सांस्कृतिक कार्यक्रम कक्ष, चिकित्सालय, व्यायामशाला, रसोई व भोजन कक्ष, अन्न कक्ष, तिजोरी कक्ष, बगिया, कौशल विकास केंद्र सब कुछ होता गया। और मंदिर पूजा व उपासना के साथ ही राज्य के सलाहकार, अन्न व संपदा के केंद्र (जिसका प्रयोग राज्य आपात स्थिति में करता था) बन गया। मंदिर संकुल में शिक्षा हेतु गुरुकुल भी था जहां शास्त्र व शस्त्रों की शिक्षा के साथ साथ कला, नृत्य, संगीत, योग, नाटक, मूर्ति कला, स्थापत्य कला, कौशल विकास, आयुर्वेद, व्यायाम, आत्मरक्षा इत्यादि की शिक्षा व सुविधा दी जाती थी। इस प्रकार भारतीय मंदिर कला, संस्कृति के साथ ही सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों का प्रमुख केंद्र थे। अपनी इस व्यवस्था के कारण भारतीय संस्कृति व सत्ता सम्पूर्ण विश्व में स्थापित हो गयी।

कालांतर में ईसाईयत व इस्लाम ने विश्व पर अपना आधिपत्य स्थापित करने के लिए हिंदू संस्कृति के स्तंभ मंदिरो व गुरुकुलों को नष्ट करने का भरकस प्रयत्न किया। अपनी साम्राज्यवादी नीतियो व सत्ता की व्यवस्था को स्थापित करने के क्रम में राज व्यवस्था की पंथनिरपेक्ष व्यवस्था पूरी दुनिया के देशों पर थोप दी गयी और मंदिर उपेक्षित व महत्वहीन बनाने की हरसंभव कोशिश की गयी। इस कारण भारत की ज्ञान परंपरा कहीं न कहीं दब सी गयी है।

चूंकि सनातन धर्म व संस्कृति सर्वाधिक वैज्ञानिक वेदों ब उपनिषदों पर आधारित है और प्रकृति केंद्रित विकास पर आधारित है इसलिए इसकी शाश्वतता अक्षुन्न है ,इस कारण आम भारतीय हिंदू आज भी इससे जुड़ा है और सनातनी जीवन व्यवस्था से ही

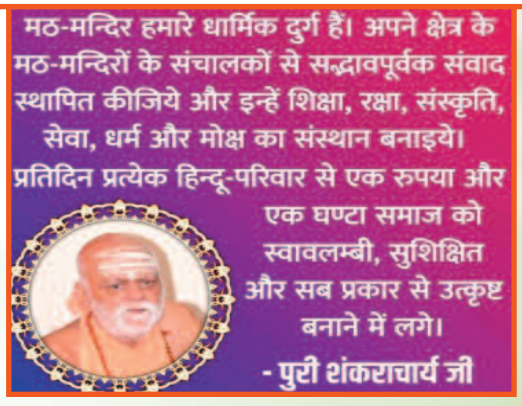

उसका जीवन संचालित होता है। यह कहा जा सकता है कि सरकार व कारपोरेट जगत पश्चिमी माडल से और आम समाज व व्यापारी वर्ग सनातन माडल से संचालित होता है।

जीडीपी आधारित, अत्यधिक केंद्रित व प्रकृति व मानव के अपार शोषण व लालच पर आधारित वर्तमान सेकूलर राज व्यवस्था का माडल अब टूटने व बिखरने के कगार पर है ।वर्तमान समय में अन्य बीमारियों के साथ साथ कोरोना जैसी महामारी और 'जलवायु परिवर्तन' जैसी भयावह चुनौतियां इस विकृत व्यवस्था के कारण उपजी हैं। इस कारण संपूर्ण मानव जाति का अस्तित्व ही संकट में है ।सनातन संस्कृति का परम्परागत माडल ही अब मानव जाति को बचा सकता है। इसके लिए पुन: मंदिरो को उनकी पुरानी भूमिका में आना होगा जो समाज को एक सूत्र में पिरोकर और जागृत कर पुन: राजव्यवस्था के सनातन माडल को स्थापित कर मानव जाति पर आए संकट को दूर करेंगे और ज्ञान परंपरा को पुनर्स्थापित कर हर व्यक्ति के समग्र आंतरिक व बाहरी विकास को कर उसकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करेंगे। इसलिए हर जागरूक व संवेदनशील सनातनी के लिए आवश्यक है कि वह अधिक से अधिक रूप में स्वयं , अपनी परिवार, रिश्ते नातेदारो व मित्रों को समग्र रूप से मंदिर से जोड़े ताकि मंदिर और उनके माध्यम से देश पुन: उठ खड़ा हो व दुनिया को अस्तित्व के संकट से निकाल समुन्नति के मार्ग की ओर ले चले।

मंदिर संकुल

वेद काल में न तो मंदिर थे और न ही मूर्ति। वैदिक समाज इकट्ठा होकर एक ही वेदी पर खड़े रहकर ब्रह्म (ईश्वर) के प्रति अपना समर्पण भाव व्यक्त करते थे। इसके अलावा वे यज्ञ के द्वारा भी ईश्वर और प्रकृति तत्वों का आह्वान और प्रार्थना करते थे। शिवलिंग की पूजा का प्रचलन प्राचीन काल से ही होता आ रहा है। शिवलिंग पूजन के बाद धीरे-धीरे नाग और यक्षों की पूजा का प्रचलन हिन्दू-जैन धर्म में बढ़ने लगा। बौद्ध काल में बुद्ध और महावीर की मूर्तियों को अपार जनसमर्थन मिलने के कारण राम और कृष्ण की मूर्तियां बनाई जाने लगीं।

माना जाता है कि प्राचीन काल में देवी या देवताओं के पूजा स्थल अलग होते थे और प्रार्थना-ध्यान करने के लिए स्थल अलग होते थे। वैदिक काल में वैदिक ऋषि जंगल के अपने आश्रमों में ध्यान, प्रार्थना और यज्ञ करते थे। हालांकि लोक जीवन में मंदिरों का महत्व उतना नहीं था जितना आत्मचिंतन, मनन और शास्त्रार्थ का था। फिर भी आम जनता इंद्र, विष्णु, लक्ष्मी, शिव और पार्वती के अलावा नगर, ग्राम और स्थान के देवी-देवताओं की प्रार्थना करते थे। बहुत से अन्य समुदायों में शिव और पार्वती के साथ यक्ष, नाग, पितर, ग्रह-नक्षत्र आदि की पूजा का भी प्रचलन था। वैदिक काल में ही चार धाम और दुनियाभर में ज्योतिर्लिंगों की स्थापना के साथ ही प्रार्थना करने के लिए भव्य मंदिरों का निर्माण किया गया। समय-समय पर इनका स्वरूप बदलता रहा और कर्मकांड भी ।समय के साथ मंदिर सांस्कृतिक चेतना का केंद्र बन एक संकुल का रूप लेते गए इस मंदिर संकुल में देव स्थान, ध्यान कक्ष, मंत्रणा कक्ष, सभा/प्रवचन कक्ष, महंत आवास ,यात्री विश्राम ग्रह, यज्ञशाला, धार्मिक पुस्तकालय, वाचनालय, गुरुकुल, गौशाला, सांस्कृतिक कार्यक्रम कक्ष, चिकित्सालय, व्यायामशाला, रसोई व भोजन कक्ष, अन्न कक्ष, तिजोरी कक्ष, बगिया, कौशल विकास केंद्र आदि होते हैं व यह क्षेत्र विशेष के सनातन धर्म लंबियो के जीवन व दैनिक गतिविधियों का केंद्र होता है। लंबे समय तक बड़े मंदिर राजसत्ता से भी संतुलन बैठाते रहे और भारत भूमि के राज्य राजसत्ता व धर्मसत्ता के संतुलन का एक अनूठा उदाहरण प्रस्तुत करते रहे।

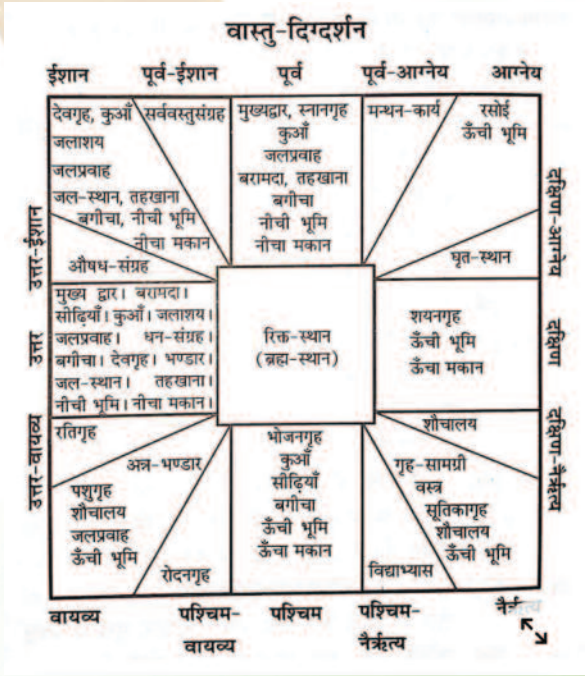

मंदिर का अर्थ होता है-मन से दूर कोई स्थान।

मंदिर का शाब्दिक अर्थ 'घर' है और मंदिर को द्वार भी कहते हैं- जैसे रामद्वारा, गुरुद्वारा आदि।

मंदिर को आलय भी कह सकते हैं जैसे की शिवालय, जिनालय।

लेकिन जब हम कहते हैं कि मन से दूर जो है वह मंदिर तो, उसके मायने बदल जाते हैं।

मंदिर को अंग्रेजी में मंदिर ही कहते हैं टेम्पल नहीं। जो लोग टेम्पल कहते हैं वे मंदिर के विरोधी हो सकते हैं।

मंदिर किसी भगवान, देवता या गुरु का होता है, आलय सिर्फ शिव का होता है और मंदिर या स्तूप सिर्फ ध्यान-प्रार्थना के लिए होते हैं, लेकिन वर्तमान में उक्त सभी स्थान को मंदिर कहा जाता है जिसमें की किसी देव मूर्ति की पूजा होती है।

मन से दूर रहकर निराकार ईश्वर की आराधना या ध्यान करने के स्थान को मंदिर कहते हैं। जिस तरह हम जूते उतारकर मंदिर में प्रवेश करते हैं उसी तरह मन और अहंकार को भी बाहर छोड़ दिया जाता है।

जहां देवताओं की पूजा होती है उसे 'देवरा' या 'देव-स्थल' कहा जाता है। जहां पूजा होती है उसे पूजा स्थल, जहां प्रार्थना होती है उसे प्रार्थनालय कहते हैं।

वेदज्ञ मानते हैं कि भगवान प्रार्थना से प्रसन्न होते हैं पूजा से नहीं।

मंदिर का महत्व

मंदिर के निर्माण के दौरान, यह वास्तुकारों, कारीगरों, मूर्तिकारों और मजदूरों के लिए रोजगार के अवसर उत्पन्न करता है।

पूरी तरह से निर्मित मंदिर सांसारिक जीवन पर अध्यात्म के महत्व का प्रतीक

वे सात सूत्र जिससे मंदिरो का पुनरुत्थान व समाज का पुनर्जागरण होगा

1) प्रतिदिन मंदिर जाना प्रारंभ कर। हमें घर में मंदिर नहीं बनाना वरन घर को मंदिर जैसा बनाना है। इसलिए अपनी पूजा, आराधना, ध्यान व योग मंदिर में करना प्रारंभ करें।

2) यथासंभव सभी व्रत, त्योहार, शुभ व मांगलिक कार्य, सभी संस्कार आदि मंदिर में ही करना प्रारंभ करें। इससे पूरे परिवार को धर्म का मर्म समझ आएगा व उनकी आंतरिक व बाह्य उन्नति होगी।

3) सेवा का कोई भी कार्य यथा दान, भंडारा, वस्त्रव कंबल वितरण, सेवा प्रकल्पों को मंदिर में माध्यम से ही करें। इससे स्वाभाविक रूप से हर अशक्त व जरूरतमंद व धर्म की मुख्यधारा से कटा व्यक्ति मंदिर व सनातन संस्कृति से जुड़ता जाएगा। यथासंभव टीका, कलावा, शिखा(चोटी) आदि धारण करें व हर लाभार्थी को ईश दर्शन, मांगलिक आरती व सनातन प्रतीकों से जोड़े।

5) इस बात का भरकस प्रयत्न करें कि मंदिर में कीर्तन, कथा, प्रवचन,ध्यान कक्षाओं, शास्त्रीय संगीत व नृत्य का आयोजन व शिक्षा, कौशल विकास की शिक्षा का केंद्र, योगशाला, यज्ञशाला , गौशाला, व्यायामशाला, आयुर्वेदिक चिकित्सालय, धार्मिक पुस्तकालय, निशक्त हिंदुओं के बच्चों के लिए अनोपचारिक विद्यालय आदि अनेकानेक गतिविधियों का संचालन नियमित रूप से होता रहे। मंदिर से जुड़ा कोई एक परिवार किसी एक गतिविधि की जिम्मेदारी ले सकता है।

6) मंदिर को मिलने वाले दान का सही प्रबंधन व हिंदू समाज के उत्थान व सनातन संस्कृति के प्रचार प्रसार में कर।

7) मंदिर से ब उससे जुड़े बड़े आयोजनो, मेलों, कथाओं आदि से गरीब, अशक्त, अनपढ़ व हाशिए पर पड़े हिंदू समाज को जोड़कर , संस्कारी बना व उसे सहायता देकर ।

देश को इसी प्रकार के पांच लाख मंदिर संकुल (हर पंचायत व वार्ड में कम से कम एक एक) जो सनातन संस्कृति व चेतना के केंद्र बन सकें ,की आवश्यकता है जिससे भारत पुनः ज्ञान व अध्यात्म की धरती बन जग का कल्याण कर सके।

है।

मंदिर के भीतर भगवान की छवि लोगों के मन को शांति प्रदान करती है।

मंदिर में संगीत, नृत्य और ललित कला कार्यक्रम कलाकारों को प्रोत्साहन देते हैं ।

मंदिर के अन्न भंडारों में पशु को चारा और भूखों को भोजन कराया जाता है।

प्रख्यात संतों द्वारा धार्मिक प्रवचन आम जनता के लिए ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है।

अन्य देशों में निर्मित मंदिर हिन्दू धर्म की संस्कृति को आगे ले जाने के रूप में कार्य करते हैं। और हिंदू धर्म के बारे में जानने में रुचि रखने वाले भारतीय समुदाय और स्थानीय जनता के लिए आध्यात्मिक और शैक्षिक सेवाओं का प्रसार करते हैं।

हिंदू मंदिर की वास्तु रचना

हिन्दू मंदिर की रचना लगभग 10 हजार वर्ष पूर्व हुई थी। उस काल में वैदिक ऋषि जंगल के अपने आश्रमों में ध्यान, प्रार्थना और यज्ञ करते थे। हालांकि लोकजीवन में मंदिरों का महत्व उतना नहीं था जितना आत्मचिंतन, मनन और शास्त्रार्थ का था। फिर भी आम जनता शिव और पार्वती के अलावा नगर, ग्राम और स्थान के देवी-देवताओं की प्रार्थना करते थे।

देश में सबसे प्राचीन शक्तिपीठों और ज्योतिर्लिंगों को माना जाता है। प्राचीन काल में यक्ष, नाग, शिव, दुर्गा, भैरव, इंद्र और विष्णु की पूजा और प्रार्थना का प्रचलन था। रामायण काल में मंदिर होते थे इसके प्रमाण हैं। राम का काल आज से 7 हजार 200 वर्ष पूर्व था अर्थात 5114 ईस्वी पूर्व।

हिन्दू मंदिरों को खासकर बौद्ध, चाणक्य और गुप्तकाल में भव्यता प्रदान की जाने लगी और जो प्राचीन मंदिर थे उनका पुन:निर्माण किया गया। ये सभी मंदिर ज्योतिष, वास्तु और धर्म के नियमों को ध्यान में रखकर बनाए गए थे। अधिकतर मंदिर कर्क रेखा या नक्षत्रों के ठीक ऊपर बनाए गए थे। उनमें से भी एक ही काल में बनाए गए सभी मंदिर एक-दूसरे से जुड़े हुए थे। प्राचीन मंदिर ऊर्जा और प्रार्थना के केंद्र थे लेकिन आजकल के मंदिर तो पूजा-आरती के केंद्र हैं।

सबसे प्राचीन मंदिर के प्रमाण

राम के काल में सीता द्वारा गौरी पूजा करना इस बात का सबूत है कि उस काल में देवी-देवताओं की पूजा का महत्व था और उनके घर से अलग पूजा स्थल होते थे। इसी प्रकार महाभारत में दो घटनाओं में कृष्ण के साथ रुक्मणी और अर्जुन के साथ सुभद्रा के भागने के समय दोनों ही नायिकाओं द्वारा देवी पूजा के लिए वन में स्थित गौरी माता (माता पार्वती) के मंदिर की चर्चा है। इसके अलावा युद्ध की शुरुआत के पूर्व भी कृष्ण पांडवों के साथ गौरी माता के स्थल पर जाकर उनसे विजयी होने की प्रार्थना करते हैं।

देश में सबसे प्राचीन शक्तिपीठों और ज्योतिर्लिंगों को माना जाता है। इन सभी का समय-समय पर जीर्णोद्धार किया गया। प्राचीनकाल में यक्ष, नाग, शिव, दुर्गा, भैरव, इंद्र और विष्णु की पूजा और प्रार्थना का प्रचलन था। बौद्ध और जैन काल के उत्थान के दौर में मंदिरों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा।

मुंडेश्वरी देवी का मंदिर बिहार के कैमूर जिले के भगवानपुर अंचल में पवरा पहाड़ी पर 608 फीट की ऊंचाई पर स्थित है। इसकी स्थापना 108 ईस्वी में हुविष्क के शासनकाल में हुई थी। यहां शिव और पार्वती की पूजा होती है। प्रमाणों के आधार पर इसे देश का सबसे प्राचीन मंदिर माना जाता है।

विश्व का सबसे बड़ा हिन्दू मंदिर अब सिर्फ कंबोडिया के अंकोरवाट में ही

महान हिन्दू राजा सम्राट विक्रमादित्य

विक्रमादित्य भारत के पहला चक्रवर्ती सम्राट थे, जिनका साम्राज्य अरब,यूरोप से ले कर रोम तक फैला हुआ था विक्रमादित्य ने भारत में राजाओं द्वारा चक्रवर्ती सम्राट की उपाधि शरू की थी

बचा हुआ है। अंकोर का पुराना नाम 'यशोधरपुर' था। इसका निर्माण सम्राट सूर्यवर्मन द्वितीय (1112-53 ई.) के शासनकाल में हुआ था। यह विष्णु मंदिर है जबकि इसके पूर्ववर्ती शासकों ने प्राय: शिव मंदिरों का निर्माण किया था।

साउथ अफ्रीका के सुद्वारा नामक एक गुफा में पुरातत्वविदों को महादेव की 6 हजार वर्ष पुरानी शिवलिंग की मूर्ति मिली जिसे कठोर ग्रेनाइट पत्थर से बनाया गया है। इस शिवलिंग को खोजने वाले पुरातत्ववेत्ता हैरान हैं कि यह शिवलिंग यहां अभी तक सुरक्षित कैसे रहा।

सोमनाथ के मंदिर के होने का ऋग्वेद में भी मिलता है इससे यह सिद्ध होता है भारत में मंदिर परंपरा कितनी पुरानी रही है। इतिहासकार मानते हैं कि ऋग्वेद की रचना 7000 से 1500 ईसा पूर्व हई थी अर्थात आज से 9 हजार वर्ष पूर्व। यूनेस्को ने ऋग्वेद की 1800 से 1500 ई.पू. की 30 पांडुलिपियों को सांस्कृतिक धरोहरों की सूची में शामिल किया है। उल्लेखनीय है कि यूनेस्को की 158 सूची में भारत की महत्वपूर्ण पांडुलिपियों की सूची 38 है।

विश्व का प्रथम ग्रेनाइट मंदिर तमिलनाडु के तंजौर में बृहदेश्वर मंदिर है। इसका निर्माण 1003-1010 ई. के बीच चोल शासक राजराज चोल 1 ने करवाया था। इस मंदिर के शिखर ग्रेनाइट के 80 टन के टुकड़े से बने हैं। यह भव्य मंदिर राजाराज चोल के राज्य के दौरान केवल 5 वर्ष की अवधि में (1004 एडी और 1009 एड़ी के दौरान) निर्मित किया गया था।

तिरुपति शहर में बना विष्णु मंदिर 10वीं शताब्दी के दौरान बनाया गया था, यह विश्व का सबसे बड़ा धार्मिक गंतव्य है। रोम या मक्का जैसे धार्मिक स्थलों से भी बड़े इस स्थान पर प्रतिदिन औसतन 30 हजार श्रद्धालु आते हैं और लगभग लाखों रुपए प्रतिदिन चढ़ावा आता है। कई शताब्दी पूर्व बना यह मंदिर दक्षिण भारतीय वास्तुकला और शिल्पकला का अद्भुत उदाहरण हैं। माना जाता है कि इस मंदिर का साया नहीं नजर आता।

विश्व का सबसे पुराना शहर : वाराणसी, जिसे 'बनारस' के नाम से भी जाना जाता है, एक प्राचीन शहर है। भगवान बुद्ध ने 500 बीसी में यहां आगमन किया था और यह आज विश्व का सबसे पुराना और निरंतर आगे बढ़ने वाला शहर है। इसके बाद अयोध्या और मथुरा का नंबर आता है।

काशी, अयोध्या, मथुरा और आगरा जैसे कई स्थान हैं, जहां पर हिन्दुओं के मंदिर को तोड़कर मस्जिद बनाई जाने का प्रमाण मौजूद है। कई इतिहासकार मानते हैं कि ताजमहल पहले तेजो महालय था जिसमें शिवलिंग स्थापित था।

दक्षिण भारत में ज्यादातर मंदिरों का अस्तित्व बरकरार है। यहां के मंदिरों की स्थापत्य कला और वास्तुशिल्प अद्भुत है। दक्षिण में रामेश्वरम में भगवान राम द्वारा भगवान शिव के मंदिर की स्थापना का जिक्र रामायण में मिलता है।

पिरामिडनुमा होते हैं मंदिर : प्राचीन काल से ही किसी भी धर्म के लोग सामूहिक रूप से एक ऐसे स्थान पर प्रार्थना करते रहे हैं, जहां पूर्ण रूप से ध्यान लगा सकें, मन एकाग्र हो पाए या ईश्वर के प्रति समर्पण भाव व्यक्त किया जाए इसीलिए मंदिर निर्माण में वास्तु का बहुत ध्यान रखा जाता है। यदि हम भारत के प्राचीन मंदिरों पर नजर डालें तो पता चलता है कि सभी का वास्तुशिल्प बहुत सुदृढ़ था। जहां जाकर आज भी शांति मिलती है। यदि आप प्राचीन काल के मंदिरों की रचना देखेंगे तो जानेंगे कि सभी कुछ-कुछ पिरामिडनुमा आकार के होते थे। शुरुआत से ही हमारे धर्मवेत्ताओं ने मंदिर की रचना पिरामिड आकार की ही सोची है। ऋषि-मुनियों की कुटिया भी उसी आकार की होती थी। हमारे प्राचीन मकानों की छतें भी कुछ इसी तरह की होती थीं। बाद में रोमन, चीन, अरब और यूनानी वास्तुकला के प्रभाव के चलते मंदिरों के वास्तु में परिवर्तन होता रहा।मंदिर पिरामिडनुमा और पूर्व, उत्तर या ईशान मुखी होता है। कई मंदिर पश्चिम, दक्षिण, आग्नेय या नैऋत्यमुखी भी होते हैं, लेकिन क्या हम उन्हें मंदिर कह सकते हैं? वे या तो शिवालय होंगे या फिर समाधि स्थल, शक्तिपीठ या अन्य कोई पूजास्थल। मंदिर के मुख्यत: उत्तर या ईशान मुखी होने के पीछे कारण यह है कि ईशान से आने वाली ऊर्जा का प्रभाव ध्यान-प्रार्थना के लिए अति उत्तम माहौल निर्मित करता है। मंदिर पूर्वमुखी भी हो सकता है किंतु फिर उसके द्वार और गुंबद की रचना पर विशेष ध्यान दिया जाता है। प्राचीन मंदिर ध्यान या प्रार्थना के लिए होते थे। उन मंदिर के स्तंभों या दीवारों पर ही मूर्तियां आवेष्टित की जाती थीं। मंदिरों में पूजा-पाठ नहीं होता था। यदि आप खजुराहो, अजंता-एलोरा, कोणार्क या दक्षिण के प्राचीन मंदिरों की रचना देखेंगे तो जान जाएंगे कि मंदिर किस तरह के होते हैं। ध्यान या प्रार्थना करने वाली पूरी जमात जब खत्म हो गई है तो इन जैसे मंदिरों पर पूजा-पाठ का प्रचलन बढ़ा। पूजा-पाठ के प्रचलन से मध्यकाल के अंत में मनमाने मंदिर बने। मनमाने मंदिर से मनमानी पूजा-आरती आदि कर्मकांडों का जन्म हुआ, जो वेदसम्मत नहीं माने जा सकते।

मंदिर की घंटी : मंदिर में घंटी लगाने का प्रचलन भी बहुत प्राचीन काल से शुरू हो चुका था। इसका प्रमाण कई प्राचीन मंदिरों की दीवारों पर बनी मूर्तियां, भित्ति चित्र आदि से ज्ञात हो सकता है। घंटी लगाने के दो कारण थे- पहला

मंदिरो को मंदिर की बना रहने दे पिकनिक स्पॉट न बनाए

मंदिर, तीर्थ स्थान - दर्शन, तपस्या, आध्यात्मिक ऊर्जा की विषय वस्तु हैं न कि पर्यटन के, पिकनिक के, घूमने के, छुट्टी मनाने के स्थान।

परंतु आज की सरकारें और जनमानस के लोग इसे शायद समझ नहीं पा रहे।

एक समय था जब लोग बद्रीनाथ - केदारनाथ यह सोच कर जाते थे की स्वर्ग जा रहे हैं क्या पता लौटेंगे या नहीं, यात्रा दुर्गम थी, पहाड़ों की चढ़ाई थी, और इसी से दर्शनार्थी की हिम्मत, श्रद्धा, भक्ति और तपस्या का भी आंकलन हो जाता था की वह देव दर्शन की कितनी चाह रखता है।

परंतु आज का समय है अब दुर्गमता सुगमता में बदल चुकी है, धड़धड़ाते हुए वाहन हेलीकॉप्टर सब देवता के मस्तक तक पहुंच जा रहे हैं, वीश आई श पी श कल्चर आ गया है जेब में पैसा है तो आप देवता के कपार तक हेलीकाप्टर से जा सकते हैं।

देवता लोग भी सोचते होंगे की हम इतनी दुर्गम जगह पर जाकर बैठे थे की हमे कोई डिस्टर्ब न कर सके लेकिन पहले तो जो आते थे वे श्रद्धा भक्ति ले के आते थे तो मुझे भी उनको आशीर्वाद देने का मन कर ही जाता था, लेकिन आज तो कूल ड्यूड, लौंडा लफाड़ी, आस्तिक, नास्तिक सब ऊपर चढ़े आ रहे हैं बस जेब में गांधी जी होना चाहिए। नौकरी की छुट्टी होनी चाहिए।

ये आएंगे होटल में मीट मुर्गा खायेंगे, दारू पियेंगे, फिर बेल बाटम पहन के परम श्रद्धालु बनकर सरपट मुझ तक पहुंचेंगे, फोटो खींचेंगे,वीडियो बनायेगें, खायेंगे पियेंगे मस्ती करेंगे और लौट जायेंगे।

इन बातों को समझना होगा, हमें भी सरकारों को भी। मंदिर के अंदर जहां देवता की मूर्ति,यंत्र,प्रतिमा या लिंग स्थापित होती है उसे गर्भ गृह कहा जाता है, गर्भगृह में प्रवेश करने,देवता को स्पर्श करने की पहले तो आपमे सामर्थ्य होनी चाहिए, तन और मन, वस्त्र की शुद्धता होनी चाहिए,

वैसे भी प्राचीन परंपरा के अनुसार विग्रह का स्पर्श नहीं करना चाहिए, आप दर्शन के लिए गए हैं तो नेत्रों से दर्शन करिए,मूर्ति को ह्रदय में धारण करिए ,यदि कुछ गंध पुष्प धूप दीप लाए हैं तो उसे खुद चढ़ाने की जगह अर्चक से चढ़वाएं, ह्रदय में देवता को धारण करके वहां से प्रस्थान करना चाहिए, अब आप कभी भी कहीं भी उस विग्रह का जब ध्यान करेंगे तो वह मूर्ति आपके ह्रदय से होकर नेत्रों तक जाएगी और आपको क्षण मात्र में दर्शन हो जायेगा, बार बार मंदिर जाने की आवश्यकता नहीं होगी।।

घंटी बजाकर सभी को प्रार्थना के लिए बुलाना और सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना। जब सृष्टि का प्रारंभ हुआ तब जो नाद था, घंटी की ध्वनि को उसी नाद का प्रतीक माना जाता है। यही नाद ओंकार के उच्चारण से भी जाग्रत होता है। जिन स्थानों पर घंटी बजने की आवाज नियमित आती है, वहां का वातावरण हमेशा शुद्ध और पवित्र बना रहता है। इससे नकारात्मक शक्तियां हटती हैं। नकारात्मकता हटने से समृद्धि के द्वार खुलते हैं। प्रात: और संध्या को ही घंटी बजाने का नियम है, वह भी लयपूर्ण। घंटी या घंटे को काल का प्रतीक भी माना गया है।

ऊर्जा के केंद्र मंदिर : अनेक प्राचीन मंदिर ऐसे स्थलों या पर्वतों पर बनाए गए हैं, जहां से चुंबकीय तरंगें घनी होकर गुजरती हैं। इस तरह के स्थानों पर बने मंदिरों में प्रतिमाएं ऐसी जगह रखी जाती थीं, जहां चुंबकत्व का प्रभाव ज्यादा हो। यहीं पर तांबे का छत्र और तांबे के पाट रखे होते थे और आज भी कुछ स्थानों पर रखे हैं। तांबा बिजली और चुंबकीय तरंगों को अवशोषित करता है। इस प्रकार जो भी व्यक्ति प्रतिदिन मंदिर जाकर इस मूर्ति की घड़ी के चलने की दिशा में परिक्रमा करता है, वह इस एनर्जी को अवशोषित कर लेता है। इससे उसको मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य लाभ मिलता है। हालांकि यह एक धीमी प्रक्रिया मानी जा सकती है लेकिन इससे मस्तिष्क में सकारात्मक ऊर्जा का विकास होता है। मंदिर में शिखर होते हैं। शिखर की भीतरी सतह से टकराकर ऊर्जा तरंगें व ध्वनि तरंगें व्यक्ति के ऊपर पड़ती हैं। ये परावर्तित किरण तरंगें मानव शरीर आवृत्ति बनाए रखने में सहायक होती हैं। व्यक्ति का शरीर इस तरह से धीरे-धीरे मंदिर के भीतरी वातावरण से सामंजस्य स्थापित कर लेता है। इस तरह मनुष्य असीम सुख का अनुभव करता है। पुराने मंदिर सभी धरती के धनात्मक (पॉजिटिव) ऊर्जा के केंद्र हैं। ये मंदिर आकाशीय ऊर्जा के केंद्र में स्थित हैं।

मंदिर समय : हिन्दू मंदिर में जाने का समय होता है। सूर्य और तारों से रहित दिन-रात की संधि को तत्वदर्शी मुनियों ने संध्याकाल माना है। संध्या वंदन को 'संध्योपासना' भी कहते हैं। संधिकाल में ही संध्या वंदना की जाती है। वैसे संधि 5 वक्त (समय) की होती है, लेकिन प्रात:काल और संध्याकाल- उक्त 2 समय की संधि प्रमुख है अर्थात सूर्य उदय और अस्त के समय। इस समय मंदिर या एकांत में शौच, आचमन, प्राणायाम आदि कर गायत्री छंद से निराकार ईश्वर की प्रार्थना की जाती है। दोपहर 12 से अपराह्न 4 बजे तक मंदिर में जाना, पूजा, आरती और प्रार्थना आदि करना निषेध माना गया है अर्थात प्रातःकाल से 11 बजे के पूर्व मंदिर होकर आ जाएं या फिर अपराह्न काल में 4 बजे के बाद मंदिर जाएं।

भारत में 7वीं सदी के प्रारंभ में मुस्लिम आक्रांताओं का आक्रमण प्रारंभ हुआ था। यहां उन्होंने सोना-चांदी आदि दौलत लूटने और इस्लामिक शासन की स्थापना करने के उद्देश्य से आक्रमण किए। 7वीं से लेकर 16वीं सदी तक लगातार हजारों हिन्दू, जैन और बौद्ध मंदिरों को तोड़ा और लूटा गया। उनमें से कुछ ऐसे थे, जो कि विशालतम होने के साथ ही भारतीय अस्मिता, पहचान और सम्मान से जुड़े थे। ■

मौलिक भारत
राष्ट्र के नवनिर्माण व व्यवस्था परिवर्तन हेतु एक अभियान/आन्दोलन